उ०प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के आत्मसम्मान, संतोष के स्तर एवं तनाव का विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षाशास्त्र में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी
राधा शर्मा

शोध निर्देशक
डॉ० छविलाल

पेडागॉजिकल साइन्सेज विभाग, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा, 282 005

2024

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसकी सहायता से व्यक्ति न केवल अपने ज्ञान का संवर्धन करता है बल्कि अपने कौशलों को भी विकसित करता है। यह व्यक्ति के भावी जीवन की आधारशिला होती है। 21 वी सदी में शिक्षा के स्वरूप में समाज की मांग के अनुसार अनेक परिवर्तन हुए है जहाँ पूर्व में अध्यापक आधारित शिक्षा की अवधारणा मौजूद थी वही आज छात्र आधारित शिक्षा पर बल दिया जाता है जिससे विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा प्रदान की जा सके। यदि विद्यार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार शिक्षा प्राप्त होगी तो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सकेगा और इसका लाभ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है। जैसा कि हम जानते है कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी के ज्ञान का परिमार्जन करना होता है तथा इस उद्देश्य की पूर्ति में अध्यापक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक विद्यार्थी के जीवन में पथ प्रदर्शक का कार्य करता है तथा किसी भी शैक्षिक संस्थान की शिक्षा प्रणाली की मजबूती उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षक ही वह साधन है, जो विद्यार्थियों में कल्पनाशीलता, बुद्धिमत्ता तथा नैतिक मूल्यों जैसे गुणों को विकसित करने में सहायता करता है। समाज की परिवर्तनशीलता के साथ-साथ शिक्षण शैली में भी परिवर्तन देखने के लिए मिल रहे है। विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक एक अहम् भूमिका रखते है क्योंकि एक विद्यार्थी अपने जीवन में अपने आदर्श शिक्षक का अनुसरण करता है। अध्यापक के साथ-साथ शैक्षिक परिवेश या वातावरण भी विद्यार्थी के व्यवहार में परिमार्जन तथा व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि सामान्यतः यह विश्वास किया जाता है की विद्यार्थी जिस प्रकार के परिवेश या वातावरण में निवास करता है उसका व्यक्तित्व भी उसी परिवेश से प्रभावित होता है। व्यक्ति का व्यवहार उसके ज्ञान से परिमार्जित होता है तथा उसी ज्ञान के कारण विद्यार्थी में आत्म-सम्मान की भावना विकसित होती है तथा आत्म-सम्मान की सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति ही उसे संतोष के स्तर तक लेकर जाती है। विद्यार्थी के संतुष्टि का स्तर ही उसमें संतोष या असंतोष की भावना विकसित करता है। विद्यार्थी के संतोष के स्तर का उच्च स्तरीय होना उसमे आत्म-विश्वास को जाग्रत करता है तथा विद्यार्थी तनाव मुक्त होकर अपने उद्देश्यों की ओर अग्रसर होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि आत्म-सम्मान, संतोष तथा तनाव विद्यार्थी के जीवन के अति आवश्यक पहलू हैं जो शैक्षिक परिवेश से प्रभावित होते है । ये विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण तथा चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा

नीति (एन. ई. पी), 2020 में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया है क्योंकि शिक्षक किसी भी देश के भविष्य का आधार होते हैं। किसी भी देश की भावी पीढ़ी पूर्ण रूप से शिक्षकों पर निर्भर होती है। शिक्षकों द्वारा प्रदान किया गया शिक्षण ही विद्यार्थी के जीवन में उसका मार्ग प्रशस्त करता है। **क्लार्क (1970)** ने शिक्षण के सम्बन्ध में लिखा है कि, "शिक्षण के अंतर्गत वे क्रियाएं सम्मिलित होती हैं, जिनका प्रारूपण और निष्पादन छात्र या अधिगमकर्ता के व्यवहार में कुछ परिवर्तन उत्पन्न करने के लिये किया जाता है।" अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु समय- समय पर अनेक आयोगों और समितियों के द्वारा सुझाव दिये गये हैं। **यशपाल समिति (1992)** ने शिक्षा के बदलते स्वरुप के अनुसार शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता तथा व्यावहारिकता पर विशेष बल दिया है। वर्ष (2015) में दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित मानव संसाधन विकास मंत्रालय, एनसीईटी, यूजीसी तकनीकी शिक्षा के अधिकारियों और विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की बैठक में बी. एड. के पाठ्यक्रम को द्विवर्षीय करने का निर्णय लिया गया। **नई शिक्षा नीति (2020)** के तहत **चार-वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी)** को भी मान्यता प्रदान कर दी गयी है।

शैक्षिक वातावरण से तात्पर्य एक ऐसे स्थान से है जहाँ कॉलेज और विश्वविद्यालय के छात्र अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा ग्रहण करते हैं। शैक्षिक वातावरण न केवल छात्रों की वरन सेवापूर्व अध्यापकों की भी मानसिक योग्यताओं और व्यावसायिक कौशलों को प्रभावित करता है क्योंकि शैक्षिक वातावरण में उनका प्रदर्शन इष्टतम होता है। इसीलिए यह माना जाता है की शैक्षिक वातावरण का सकारात्मक होना अति आवश्यक है। शिक्षक का व्यक्तित्व, शिक्षार्थी की विशेषताएँ, शैक्षणिक सामग्री, मूल्याँकन तथा प्रशासनिक मुद्दे आदि करक भी शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करते है।

आत्म-सम्मान किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं के मूल्य के बारे में किये गये व्यक्तिगत निर्णय को संदर्भित करता है। आत्म-सम्मान किसी भी व्यक्ति का स्वयं के प्रति बनाया गया दृष्टिकोण या आत्म मूल्याङ्कन होता है। **सिरिन एण्ड रोजर्स, (2015)** के अध्ययन में यह ज्ञात होता है कि आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक प्रक्रिया के मध्य एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सह- सम्बन्ध

है। आत्म-सम्मान व्यक्ति का स्वयं की क्षमताओं और मूल्य के प्रति विश्वास तथा दृष्टिकोण को दर्शाता है। **जोशी, एस. एण्ड श्रीवास्तव (2009)** ने अपने अध्ययन, "सेल्फ स्टीम एण्ड ऐकडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ अड़ोलेसेंटस"के अन्तर्गत पाया की लड़कियों की तुलना में लड़कों ने आत्म-सम्मान में अधिक अंक प्राप्त किए है तथा ग्रामीण और शहरी किशोरों के आत्म-सम्मान के सम्बंध में भी अंतर पाया। उच्च स्तरीय आत्म-सम्मान वाले व्यक्ति का स्वयं के प्रति सकारात्मक तथा निम्न स्तरीय आत्म-सम्मान वाले व्यक्ति का स्वयं के प्रति नकारात्मक या शून्य दृष्टिकोण होता है।

आत्म-सम्मान, आत्म मूल्य की एक ऐसी भावना है जो व्यक्ति में आत्म विश्वास को बढ़ाती है। विद्यार्थी द्वारा समय-समय पर अपनी उपलब्धियों का आकलन करके अपने आत्म-सम्मान को विकसित किया जा सकता है। विद्यार्थी की उपलब्धियां जितनी अधिक होती है, उसका आत्म-सम्मान भी उतना ही उच्च स्तरीय होता है।

विश्वविद्यालयों के शैक्षिक कार्यक्रमों की गुणवत्ता के संकेतक के रूप में विद्यार्थियों की संतुष्टि अति महत्वपूर्ण होती है। संतोष किसी विद्यार्थी की अपने कार्य के प्रति सकारात्मक और नकारात्मक भावनाओं के संयोजन का प्रतिनिधित्व करता है। विद्यार्थी जो अपने शैक्षणिक विषयों, विधियों, शैक्षिक वातावरण तथा शिक्षकों से संतुष्ट होते है उनमे उच्च स्तरीय अध्ययन प्रतिबद्धताएँ पायी जाती है। विद्यार्थी की संतुष्टि कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के शैक्षिक व्यवहार, शिक्षण विधियों तथा प्रविधियों, शिक्षण सामग्री तथा शिक्षण उपकरण से प्रभावित होती है इसीलिये उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की संतुष्टि में सुधार के लिए विशिष्ट सिफारिशें प्रस्तावित की गई हैं।

'तनाव'शब्द का प्रयोग पहली बार हैंस सेली द्वारा 1936 में किया गया। सेली ने तनाव को **"किसी भी मांग के प्रति शरीर की गैर विशिष्ट प्रक्रिया"** के रूप में बताया। इन्होंने तनाव की दो रूपों में बताया है-

1.यूस्ट्रेस (अच्छा तनाव)

2.स्ट्रेस (बुरा तनाव)

यूस्ट्रेस का कोई नकारात्मक परिणाम नहीं होता है यह व्यक्ति के लिए फायदेमंद होता है। इसमे व्यक्ति कठिनाइयों मे

अनुकूलन करना सीखता है। जबकि स्ट्रेस के शरीर पर नकारात्मक प्रभाव होते है और इसे हानिकारक माना जाता है। जब कोई व्यक्ति तनाव के प्रति अनुकूलन नहीं हो पाता और यह लंबे समय तक चलता है, तो यह व्यक्ति के लिए हानिकारक होता है। तनाव चाहे यूस्ट्रेस हो या स्ट्रेस यह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति इसे किस प्रकार से लेता है तथा वह परिवर्तन हेतु सफलतापूर्वक अनुकूलन कर सकता है या नहीं कर सकता है ।

समस्या का प्रादुर्भाव

वर्तमान समय में विद्यार्थी के पास शिक्षा प्राप्ति हेतु अनेक विकल्प उपलब्ध है। ऐसे में विद्यार्थी को यह निर्णय करने में कठिनाई होती है कि शिक्षा प्राप्ति के लिए कौन-सा विकल्प अधिक उपयुक्त है तथा वह कहाँ से शिक्षा ग्रहण करे, जिससे वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार विश्वविद्यालय का चयन करता है, जो कि उसके लिए बहुत बड़ी चुनौती होती है। विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों के साथ-साथ सेवापूर्व अध्यापकों को भी अनेक रूपों में प्रभावित करता है।यह सेवापूर्व अध्यापको में आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान की भावना को विकसित करता है, जिससे उन्हें संतोष की अनुभूति होती है तथा वे तनाव मुक्त होकर शिक्षा ग्रहण कर पाने में सक्षम हो पाते है।

आत्मसम्मान से सम्बंधित **साहू, के. एण्ड सिंह, डी. (2011)** के अध्ययन, “साइकोलॉजी वेल-बीइंग एण्ड सैल्फ-स्टीम इन प्रोफेशनल कॉलेज स्टूडेंट्स” के परिणाम से ज्ञात होता है कि प्रोफेशनल कॉलेज के स्टूडेंट्स अपने आत्म-सम्मान और स्वास्थ्य के औसत स्तर से ऊपर है एवं उच्च आय वर्ग में उच्च आत्म-सम्मान पाया गया है। इसके अलावा तनाव के सम्बन्ध में शहरी क्षेत्र में हुए **विवेक वी. वघेचावर एट अल (2013)** के अध्ययन, “ए स्टडी ऑफ स्ट्रेस अमंग स्टूडेंट्स ऑफ प्रोफेशनल कॉलेज फ्रॉम एन अर्बन एरिया इन इंडिया” में तीन क्षेत्रों, इंजीनियरिंग, डेंटल और मेडिकल में एक क्रॉस सेक्शनल अध्ययन करके बताया की अध्ययनरत तीनों क्षेत्रों के छात्र तनाव के संपर्क में थे जिसमें शैक्षणिक कारक सबसे महत्वपूर्ण तनाव में से एक था। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न चरों से सम्बंधित अध्ययनों को पढ़कर तथा वर्तमान में व्याप्त विश्वविद्यालयों के अनेक रूपों को देखते हुए शोधार्थिनी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्या सभी विश्वविद्यालयों का शैक्षिक परिवेश एक समान होता है ? तथा क्या विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालय सेवापूर्व अध्यापकों

पर समान रूप से प्रभाव डालते है? या इन विश्वविद्यालयों में भिन्नता होने पर भी समानता होती है ?

किसी भी देश, समाज तथा मानव की प्रगति में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा शिक्षण की इस प्रक्रिया को सार्थक बनाने में अध्यापक एवं विश्वविद्यालयी परिवेश की प्रमुख भूमिका होती है, क्योंकि देश के नागरिकों को भावी जीवन के लिये तैयार करने की जिम्मेदारी एक शिक्षक की होती है। इस संदर्भ में **कोठरी आयोग (1964-66)** ने कहा है कि, "भारत का भविष्य उसकी कक्षाओं में आकार ले रहा है।" शिक्षा की गुणवत्ता न केवल शिक्षण प्रक्रिया पर बल्कि अध्यापकों की गुणवत्ता एवं शिक्षण- प्रशिक्षण महाविद्यालयों की गुणवत्ता पर भी निर्भर करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में अध्यापकों के सशक्तिकरण पर विशेष बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त आर. टी. ई. एक्ट (2009) तथा एन. सी. एफ. टी . ई. रेगुलेशन (2014) आदि ने भी अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर बल दिया है। किसी भी अध्यापक के लिये उसकी स्वयं की रूचि, आत्म-सम्मान तथा संतोष विशेष महत्व रखते हैं क्योंकि इन सभी कारको के अभाव में किसी भी शिक्षक में शिक्षण अकुशलता, मानसिक तनाव व दबाव, कार्य क्षमता में कमी की स्थिति पैदा हो सकती है।

26 नवंबर 1949 में गठित हुए भारतीय संविधान में, भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में विकसित करने की बात की गयी है जो लोकतांत्रिक हो, न्यायपूर्ण हो, तथा सामाजिक रूप से सचेत हो। हम जानते है कि इतना महत्वपूर्ण कार्य एक अध्यापक द्वारा तभी किया जा सकता है जब उसका स्वयं का विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण इस प्रकार का हो जो उसमे आत्म-सम्मान की भावना विकसित करे, शिक्षा के प्रति संतोष की अनुभूति करते हुए उसे तनाव मुक्त रखे । इस प्रकार विभिन्न विश्वविद्यालयों से सम्बंधित शोधों का अध्ययन करने पर शोधार्थिनी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि:-

शोध प्रश्न :

1. क्या विभिन्न विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई भिन्नता होती है ?

2. क्या विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने वाले सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म-सम्मान की भावना को विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण प्रभावित करता है ?

3. क्या विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के संतोष के स्तर पर विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण कोई प्रभाव डालता है ?

4. क्या विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों में विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण के सन्दर्भ में कोई तनाव की स्थिति पायी जाती है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा इस समस्या को शोध समस्या के रूप में लिया गया है।

समस्या का औचित्य

परिवर्तनशीलता समाज का नियम है अतः शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भी आवश्यकतानुसार परिवर्तन होते रहते है। समय की मांग के अनुसार सम्पूर्ण विश्व एक नवीन शिक्षा तंत्र की ओर अपने कदम तेजी से प्रसारित कर रहा है जिससे शिक्षा के क्षेत्र को भी उन्नत बनाया जा सके तथा वे शैक्षिक प्रणाली को एक नया रूप प्रदान कर सके। जैसा की हमें भली भांति ज्ञात है कि शैक्षिक वातावरण शिक्षण प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण आयाम होता है तथा एक कुशल अच्छे शैक्षिक परिवेश के अभाव में यह प्रक्रिया कभी भी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकती है क्योंकि विश्वविद्यालयों का शैक्षिक वातावरण सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया को प्रभावित करता है। चूँकि अध्यापक को राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है अतः पहले शिक्षकों की शिक्षा व्यवस्था का बेहतर होना अति आवश्यक है क्योंकि देश का भविष्य उन्ही पर निर्भर करता है। सेवापूर्व अध्यापकों में शैक्षिक गुणवत्ता को विकसित करने के लिए यह अति आवश्यक है कि उनकी रुचियों को समझा जाये ताकि उनके अनुरूप शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके। जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि हो सके और उनमे आत्म-सम्मान की भावना जागृत हो सके जिससे वे तनाव मुक्त होकर संतोष के अनुभव की प्राप्ति कर सके, और ये तभी सम्भव है जब वे स्वयं तनाव तथा दवाव मुक्त हो तथा वे स्वयं संतोष का अनुभव करते हो।

शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य के बारे में अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि शैक्षिक वातावरण, आत्म-सम्मान, संतोष के स्तर तथा तनाव चरों से सम्बन्धित देश-विदेशों में अनेक शोध हुए हैं जो संक्षेप में निम्नलिखित हैं:-

तालिका 1: शोध साहित्य का सारिणीकरण

क्र. सं.	वर्ष	शोधकर्ता	शीर्षक	निष्कर्ष
1.	2023	हॉक, के. ई. एट अल	द फैक्टर्स एसोसिएटेड विद टीचर्स जॉब सटिस्फैक्शन एंड देयर इम्पैक्ट ऑन स्टूडेंट्स अचीवमेंट: ए रिव्यु (2010-2021)	शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि में सुधार के लिए प्रभावशाली कारकों पर शोध के परिणाम शिक्षकों की व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक क्षमताओं के विकास को बढ़ावा देते है, और यह भी बताते है कि छात्रों की उपलब्धि कैसे बढ़ायी जा सकती है।
2.	2023	नरयाना, जेड़. एट अल	द फैक्टर्स एसोसिएटेड विद टीचर्स जॉब सटिस्फैक्शन एंड देयर इम्पैक्ट ऑन स्टूडेंट्स अचीवमेंट: ए रिव्यु	यह शोध हमें समय के साथ-साथ बदलावों और लेखन-आधारित ज्ञान नेटवर्क के रुझानों की समझ देता है एवं पाठ्यक्रम और आत्म-सम्मान शोध पर व्यवस्थित साहित्य नेटवर्क विश्लेषण प्रस्तुत करता है।
3.	2022	ओजकाँन, यू. बी. एंड जैक, ई.	टीचर्स जॉब सटिस्फैक्शन: मल्टीलेवल एनालिसिस ऑफ़ टीचर, स्कूल एंड प्रिंसिपल इफेक्ट्स	इस शोध अध्ययन में पाया गया कि पुरुष प्रधानाध्यापकों के साथ काम करने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अधिक होती है। शहरी स्कूलों में काम करने वाले शिक्षकों में ग्रामीण बस्तियों में काम करने वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक कार्य संतुष्टि तथा निजी स्कूलों में काम करने वाले शिक्षकों की अपेक्षा सरकारी स्कूलों में काम करने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अधिक है।
4.	2022	फेलिप, आर. एट ऑल	अकेडमिक सेल्फ एफिकेसी, सेल्फ स्टीम, सटिस्फैक्शन विद स्टडीजएंड वर्चुअल मीडिया यूसेज डिप्रेशन प्रेडिक्टर्स अमंग कॉलेज स्टूडेंट्स ड्यूरिंग कोविड-19	अध्ययन में पाया गया की आत्म-सम्मान पढ़ाई से संतुष्टि और अकादमिक आत्म-प्रभावकारिता के बीच एक सकारात्मक सह सम्बन्ध है और वे नकारात्मक रूप से अवसाद की भविष्यवाणी करते है। इसके अलावा अकादमिक आत्म-प्रभावकारिता आभासी मीडिआ के उपयोग की सकारात्मक भविष्यवाणी करती है।
5.	2021	जूनियर, पी. वी. एट ऑल	फाइंडिंग सटिस्फैक्शन इन विलोंगिंग: प्री सर्विस टीचर सब्जेक्टिव वेल बीइंग एंड इट्स रेलशनशिप टु विलोंगिंग ट्रस्ट एंड सेल्फ एफिकेसी	अध्ययन के निष्कर्ष में शिक्षकों की आत्म प्रभाव कारिता और नौकरी की संतुष्टि के बीच सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। नौकरी से संतुष्टि वेल बीइंग का एक विशिष्ट डोमेन माप है और इसका जीवन सतुष्टि के साथ 0.04 सह सम्बन्ध दिखाया गया। इसके अलावा कुछ अन्य अध्ययनों में यह पाय गया की आत्म प्रभाव कारिता अप्रत्यक्ष रूप से जीवन संतुष्टि से सम्बन्धित है।

6.	2021	अलकेंटारा, फर्डिनेंड	लेवल ऑफ़ सटिस्फैक्शन ऑफ़ द प्री सर्विस टीचर्स इन देयर ऑफ़ कैंपस प्रैक्टिस टीचिंग एक्सपीरिएंस	अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया की कार्यालय द्वारा डी गयी सेवाओं और उनके सहयोगी विद्यालयों को उनके अनुभवों के प्रति सेवापूर्व शिक्षकों की संतुष्टि स्तर के बीच एक कमजोर रेखिक सह-सम्बन्ध है इसलिए छात्र शिक्षण कार्यालय को बारीकी से कार्य करना चाहिए।
7.	2020	डाउन, केमल	इम्प्रूविंग स्टूडेंट्स ऐकडेमिक परफॉरमेंस फ्रॉम द इनसाइड आउट : द रिलेशनलशिप बिटवीन सेल्फ स्टीम एंड ऐकडेमिक परफॉरमेंस	अध्ययन के निष्कर्ष में आत्म-सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सम्बन्धों के बारे में मिश्रित निष्कर्ष सामने आये, लेकिन छात्र के विकास में, आत्म-सम्मान के संभावित प्रभाव के बारे में साधारण सहमति दिखाई दी।
8.	2020	राणा, विजय एट अल	सेल्फ स्टीम एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन ऐकडेमिक अचीवमेंट अमंग एडोलसेंट इन एंड अराउंड लखनऊ (यू पी.) इंडिया	अध्ययन के दौरान आत्म-सम्मान के उपायों में निहित एक बड़ी समस्या यह थी की आत्म-रिपोर्ट, आत्म प्रस्तुति सम्बन्धी चिंताओं से किस हद तक प्रभावित होती है। छात्र आत्म-सम्मान की एक मजबूत मौलिक इच्छा से निर्देशित होते हैं। लोग सफलताओं के लिये श्रेय का दावा करते हैं लेकिन असफलताओं के लिये दोष देने से इंकार करते हैं। वे अपनी क्षमताओं को बड़ा चढ़ा कर बताते हैं।
9.	2020	कुमार, भरत	स्टडी ऑफ़ जॉब रिलेटेड सटिस्फैक्शन: लेवल ऑफ़ जॉब सटिस्फैक्शन अमंग टीचर्स इन देहरादून	इस अध्ययन में यह पाया गया की पीजीटी की कार्य संतुष्टि का एक विशिष्ट स्तर हैं , लैंगिक आधार पर कार्य संतुष्टि में भी समान अतंर देखा गया है। किसी राष्ट्र के विकास के लिये छात्रों को सर्वोत्तम संभव देने के लिये शिक्षकों को अपने पेशे से पूरी तरह संतुष्ट होना चाहिए। इस स्थितियों में सुधार के लिये प्रबन्ध की शिक्षण स्टाफ की संतुष्टि के लिये प्रबन्ध की शिक्षण स्टाफ की संतुष्टि के लिये उचित कदम उठाने चाहिए।
10.	2019	डाट, टैन गुयेन एट अल	लो सेल्फ स्टीम एंड इट्स एसोसिएशन विद एंजायटी, डिप्रेशन एंड सोसाइटल आइडिएशन इन वियतनाम सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स:अ क्रॉस सेक्शनल स्टडी	अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया की आत्म-सम्मान का सम्बन्ध चिंता, अवसाद और शैक्षणिक तनाव से है जो छात्रों के जीवन की गुणवत्ता को महत्वूर्ण रूप से प्रभावित करता है और आत्म हत्या के विचार से जुड़ा है इसलिए ऐकडेमिक परिणाम के तनाव से निपटने के लिए छात्रों के आत्म-सम्मान और कौशल को सक्रिय रूप से बढ़ाने के उद्देश्य से सुचना या सेवाओं के स्कूल- आधारित या वेब आधारित प्रावधान की आवश्यकता का सुझाव देते है।

11.	2018	नोरोन्हा, एल. एट अल	अ स्टडी ऑफ़ द सेल्फ स्टीम एंड ऐकडेमिक परफॉरमेंस अमंग द स्टूडेंट्स	अध्ययन के निष्कर्ष में जेंडर डिफरेंस पाया गया जहाँ महिला उत्तरदाताओं में पुरुष उत्तरदाताओं की तुलना में अधिक आत्म-सम्मान है। लेकिन उत्तरदाताओं के आत्म-सम्मान और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।
12.	2017	वेनडे, डी. एट अल	द साइलेंस ऑफ़ मेन्टल हेल्थ इश्यूज विद इन यूनिवर्सिटी एनवायरनमेंट : ए कॉन्टिटेटिव स्टडी	इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि ज्ञान के विकास तथा सांस्कृतिक संवर्धन के अवसरों के बढ़ने के साथ - साथ विश्वविद्यालयी वातावरण में भी तीव्र गति से परिवर्तन होते जा रहे है। अतः व्यक्ति को अपनी सीखने की क्षमता को बढ़ाने तथा ज्ञान संवर्धन हेतु स्वास्थ्य तथा कल्याण को सक्षम करना होगा।
13.	2016	वोगल, एस. एट अल	लर्निंग एंड मेमोरी अंडर स्ट्रेस: इम्प्लकैशन फॉर द क्लासरूम	अध्ययन में पाया गया था कि तनाव का हमारी सीखने और याद रखने की क्षमता पर दूरगामी प्रभाव होता है, जिसका शैक्षिक सेटिंग्स पर प्रमुख प्रभाव पड़ता है। कुछ अध्ययनों में यह भी पता चला कि व्यक्ति जेंडर या तनाव प्रणाली की प्रतिक्रियाशीलता में अंतर, तनाव सीखने को प्रभावित करने के तरीकों को नियंत्रित कर सकता है। यह भी पाया गया है कि विकास के दौरान अलग-अलग समय बिंदुओं पर तनाव की अलग अलग तीव्रताएँ अलग-अलग उत्पन्न कर सकती है।
14.	2016	देव, एस. एट अल	डिप्रेशन अमंग इंडियन यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स एंड इट्स असोसिएशन विद परसीव्ड यूनिवर्सिटी ऐकडेमिक एनवायरनमेंट, लिविंग अरेंजमेंटेंड पर्सनल इश्यूज	शोध अध्ययन में यह पाया गया कि जिन विद्यार्थियों में विश्वविद्यालय के शैक्षिक वातावरण और रहने की व्यवस्था के बारे में सकारात्मक विचार थे उन विद्यार्थियों में अपने समकक्षों की अपेक्षा अवसाद का स्तर कम था।
15.	2015	अरसद, एम. एट अल	सेल्फ स्टीम एंड ऐकडेमिक परफॉरमेंस अमंग यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स	अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया कि विश्वविद्यालय के छात्रों में आत्मा सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सह सम्बन्ध है और यह भी देखा गया की उच्च स्तर का आत्म सम्मान अच्छे शैक्षणिक प्रदर्शन की ओर ले जाता है तथा महिला छात्राओं का शैक्षणिक प्रदर्शन पुरुष छात्रों की अपेक्षा अधिक था व पुरुष छात्रों में महिला छात्राओं की अपेक्षा अधिक आत्म-सम्मान था।
16.	2011	चैन, रॉय यू हुंग	दी इम्पैक्ट ऑफ़ स्टूडेंट्स इन्वॉल्वमेंट	इस शोध के निष्कर्ष में यह पाया गया कि छात्रों का रहना और सीखने का अनुभव विश्वस्तरीय

			एंड कॉलेज एनवायरनमेंट ऑन स्टूडेंट्स लर्निंग एंड लिविंग एक्सपीरियंस एट वर्ल्ड क्लास रिसर्च यूनिवर्सिटीज इन चीन :ए कम्पेरेटिव केस स्टडी ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ़ होन्गकॉंग एंड संघाई जिओस टोंग यूनिवर्सिटी	विश्वविद्यालय के विकास पर मुख्य प्रभाव डालता है। अंत में शोधकर्त्ता द्वारा चीनी विश्वविद्यालयों को निम्नलिखित दो अवधारणाओं को और बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया गया :- १. छात्र भागीदारी २. कॉलेज का वातावरण

उपर्युक्त शोधों का अध्ययन करने से ये ज्ञात होता है कि पूर्व में हुए शोधों में विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण चर के साथ व्यक्तिगत समस्याएं, शैक्षिक प्रदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, लिविंग अरेंजमेंट; आत्म-सम्मान चर के साथ विभिन्न चर, लाइफ सेटिस्फैक्शन, ऐकडेमिक परफॉरमेंस, ऐकडेमिक अचीवमेंट, एंग्जायटी, डिप्रेशन, सुसाइडल आइडिएशन, ऐकडेमिक इंटरेस्ट; संतोष चर के साथ विभिन्न चर सेल्फ एफिकेसी, इमोशनल एग्जोशन, ट्रस्ट, वर्चुअल मीडिया, वीमेन स्टडी, को एजुकेशन यूनी जेंडर इंस्टीटूशन, टीचर्स जॉब सटिस्फैक्शन, स्टूडेंट्स अचीवमेंट तथा तनाव चर के साथ विभिन्न चर इमोशनल एग्जोशन , लर्निंग, मेन्टल हेल्थ, ऐकडेमिक परफॉरमेंस, ऐकडेमिक सक्सेस के संदर्भ में अनेक शोध हो चुके हैं, परन्तु विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म-सम्मान, संतोष, तथा तनाव से सम्बन्धित विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में कोई भी शोध शोधार्थिनी को उपलब्ध नहीं हुआ है। अतः विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म-सम्मान, संतोष के स्तर तथा तनाव का विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन करने के उद्देश्य से शोधार्थिनी द्वारा इस शोध समस्या को चयनित किया गया है।

समस्या कथन

उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के आत्मसम्मान, संतोष के स्तर एवं तनाव का विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म-सम्मान, संतोष के स्तर तथा तनाव का विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना है, जिसमें प्रयुक्त प्रमुख शब्द सेवापूर्व अध्यापक, आत्मसम्मान, संतोष, तनाव तथा शैक्षिक वातावरण है।

सेवापूर्व अध्यापक

सैद्धांतिक परिभाषा:- कोलिन डिक्शनरी (2023) के अनुसार,“ एक युवा व्यक्ति जो शिक्षक बनने की योजना बना रहा है और जो प्रारम्भिक शिक्षा मे अपने समय का कुछ हिस्सा प्रधान शिक्षक की देखरेख में शिक्षक कार्य करने में व्यतीत करता है।“

कार्यात्मक परिभाषा:- सेवापूर्व अध्यापक वह व्यक्ति है जो शिक्षक बनने हेतु आवश्यक उपाधि लेने के लिये किसी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में नामांकित होता है तथा निर्धारित समय में निर्धारित पाठ्यक्रम को पूर्ण करके शिक्षक शिक्षा में उपाधि प्राप्त करता है।

विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण

सैद्धांतिक परिभाषा:- मार्टा विडाल के (2017) अनुसार, "भौतिक स्थान और संस्कृतियाँ, जिनमे विद्यार्थी सीखते है, शैक्षिक वातावरण कहलाता है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय की नीतियाँ और उसके शासन को भी शैक्षिक वातावरण की विशेषता माना जाता है। "

कार्यात्मक परिभाषा:- प्रस्तुत शोध अध्ययन में विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण से तात्पर्य शिक्षक- छात्र अंतःक्रिया, सेवापूर्व अध्यापकों के आपसी सम्बन्ध, शिक्षकों की भूमिका, पाठयक्रम, शिक्षण विधियाँ, कक्षागत सुविधायें, मूल्याङ्कन प्रणाली तथा विश्वविद्यालयों में होने वाली विभिन्न गतिविधियों एवं नीतियों से है।

आत्म-सम्मान

सैद्धांतिक परिभाषा:- डी. एन. श्रीवास्तव (2004) के अनुसार, “व्यक्ति की अपनी स्वयं के सम्बन्ध के धनात्मक या ऋणात्मक अभिवृत्ति ही उसका आत्म-सम्मान है।”

कार्यात्मक परिभाषा:- प्रस्तुत शोध अध्ययन में आत्म-सम्मान से तात्पर्य सेवापूर्व अध्यापकों के व्यवहार की सकारात्मकता (पॉजिटिविटी) एवं विनम्रता (युमिलिटी), स्पष्टोक्ति (ओपन्नेस), शैक्षिक-क्षमता, आत्म-मूल्य (सेल्फ-वर्थ) तथा सीखने की दिशा (लर्निंग-ओरिएंटेशन) से है, जिसे वे किसी विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण के दौरान अनुभव करते हैं।

संतोष

सैद्धांतिक परिभाषा:- लॉक (1976) के अनुसार, " संतुष्टि एक अच्छे एहसास के रूप में होती है और यह तब होती है जब आपने कोई सफलता प्राप्त कर ली हो या जब आप कुछ प्राप्त करना चाहते हो और वह आपको प्राप्त हो जाए,कुछ ऐसा जो आपको संतुष्टि प्रदान करता हो।"

कार्यात्मक परिभाषा :- शोध अध्ययन के अंतर्गत संतोष से तात्पर्य सेवापूर्व अध्यापकों के मन की उस दशा से है, जिसमे वे किसी भी विश्वविद्यालय में अध्ययन करते समय प्रसन्नता या निराशा का अनुभव करते हैं, जिससे उन्हे सुख या दु:ख की अनुभूति होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा संतोष स्तर को जानने के लिए निम्नलिखित आयामों को सम्मिलित किया जायेगा:- विश्वसनीयता(रिलायबिलिटी), जवाबदेही (रेस्पोंसिवनेस), आश्वासन (एश्योरेन्स), मूर्तता (टेंजिबिलिटी) एवं सहानुभूति (इम्पैथी)।

तनाव

सैद्धांतिक परिभाषा:- हैंस सेली (1976) की अनुसार, "तनाव शब्द शारीरिक मानसिक असंतुलन तथा वैज्ञानिक आधार पर किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए हार्मोन्स की प्रतिक्रिया है। "

कार्यात्मक परिभाषा:- प्रस्तुत शोध अध्ययन में तनाव से तात्पर्य विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक तथा व्यवहारात्मक तनाव से है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध समस्या की प्रकृति के आधार पर निन्मलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है:-

1. उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म-सम्मान, संतोष के स्तर एवं तनाव का अध्ययन करना।
3. उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म-सम्मान का विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के संतोष के स्तर का विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के तनाव का विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ इस :अध्ययन के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं:

H0: उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H0: उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म-सम्मान में विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H0: उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के संतोष के स्तर में विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H0: उ० प्र० के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों के तनाव में विश्वविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर- विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण **आश्रित चर -** 1. आत्म-सम्मान 2. संतोष 3. तनाव

अध्ययन की विधि

शोध अध्ययन की विधि के रूप में **वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन का न्यादर्श चयन

शोध अध्ययन में विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी. एड. के चतुर्थ सेमेस्टर के सेवापूर्व अध्यापकों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया जाएगा, जिसमे सोद्देश्य न्यादर्श विधि के माध्यम से 3 विश्वविद्यालयों, केंद्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय, और डीम्ड विश्वविद्यालय का चयन किया जाएगा, जिसमे प्रत्येक विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय से 250-250 सेवापूर्व अध्यापकों को सोद्देश्य प्रविधि से न्यादर्श के रूप में चयनित किया जाएगा, इस प्रकार कुल 750 सेवापूर्व अध्यापकों का न्यादर्श होगा।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल उत्तर प्रदेश राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों को शामिल किया जायेगा।
2. शोध अध्ययन के अन्तर्गत बी.एड. के द्विवर्षीय कार्यक्रम में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों को सम्मिलित किया जायेगा।
3. शोध अध्ययन के अन्तर्गत परिभाषित जनसंख्या से 750 सेवापूर्व अध्यापकों को लिया जायेगा।
4. प्रस्तुत शोध में केवल उत्तरप्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालय, और डीम्ड विश्वविद्यालय में अध्ययनरत सेवापूर्व अध्यापकों को सम्मिलित किया जायेगा।

अध्ययन उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त हुए चरों के मापन हेतु 4 उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा, जिसमें से 2 उपकरणों को अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विषय विशेषज्ञों की सहायता से विकसित किया जायेगा।

1. **आत्म-सम्मान** – संतोष धार एण्ड उपेन्द्र धार- सेल्फ स्टीम स्केल (2015)।
2. **संतोष** - एस.अली एंड एस. के. झा- स्टूडेंट्स इंस्टीट्यूशन सैटिस्फैक्शन स्केल (2013)
3. **तनाव** - स्वनिर्मित उपकरण
4. **विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण-** स्वनिर्मित उपकरण

सांख्यिकी प्रविधियाँ

शोध अध्ययन में एकत्रित प्रदत्तो के विश्लेषण के लिए प्रदत्तो की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक एवं निष्कर्षात्मक सांख्यिकी प्रविधियों एवं ग्राफिकल निरूपण का प्रयोग किया जाएगा।

वर्णनात्मक सांख्यिकी प्रविधि

1. मध्यमान
2. मानक विचलन

निष्कर्षात्मक सांख्यिकी प्रविधि

1. टी – परीक्षण
2. अनोवा

शोध अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

समस्त शैक्षणिक प्रक्रिया में विश्वविद्यालय के शैक्षिक परिवेश एवं शिक्षक का प्रमुख स्थान होता है। शिक्षक ही होता है जो विद्यार्थी में शिक्षा के प्रति रुचि जागृत करता है तथा शैक्षिक परिवेश के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी मानसिक योग्यताओं एवं व्यक्तिगत कौशलों को विकसित करने के अधिकाधिक अवसर प्रदान किये जाते है। शिक्षा की गुणवत्ता को शिक्षक का आत्म-सम्मान, पाठ्यक्रम, शैक्षिक परिवेश, शिक्षण विधियाँ तथा संतोष सभी कारक प्रभावित करते हैं। शोध अध्ययन के द्वारा सेवापूर्व अध्यापकों की शिक्षण-अधिगम के सम्बंध में विकसित होने वाली अवधारणा तथा मानसिक स्थति को समझा जा सकेगा तथा उन्हें स्वयं के आत्म-सम्मान के सम्बंध में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्राप्त होगी।

शैक्षिक परिवेश का उत्तम होना न केवल विद्यार्थी के लिए बल्कि राष्ट्र के विकास के लिए भी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि विद्यार्थी ही भविष्य में राष्ट्र का निर्माता बनता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह ज्ञात हो सकेगा कि सेवापूर्व अध्यापकों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने तथा उनमें शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करने में कौन-कौन से कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं तथा वे कौन-कौन से कारक हैं जिन पर शैक्षिक प्रशासन को ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध के द्वारा सेवापूर्व अध्यापकों में तनाव उत्पन्न करने वाले उत्तरदायी कारणों की पहचान करने में सहायता प्राप्त होगी, जिससे उनकी शैक्षिक समस्याओं का समाधान करते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार

करके उसे लक्ष्य तक पहुँचाया जा सकेगा। यद्यपि यह बात सत्य है कि शिक्षण सामग्री, विद्यालय भवन, पाठ्यसहगामी क्रियाएं, पाठ्यक्रम आदि सभी शैक्षिक प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण साधन हैं, परंतु साथ ही साथ सेवापूर्व अध्यापक का इन सब क्रियाओं से संतुष्ट होना भी उतना ही आवश्यक है क्योंकि जब तक व्यक्ति किसी कार्य या गतिविधि से स्वयं संतुष्ट नहीं होगा तब तक वह अपने ज्ञान को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेगा।

शोध अध्ययन के परिणामों के माध्यम से विभिन्न विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक प्रशासनिक संस्थाएँ वर्तमान के सेवापूर्व अध्यापकों की शिक्षा में सुधार करने में सक्षम हो सकेंगी तथा भावी शिक्षकों की शिक्षा को प्रभावी बनाने का भी मार्ग प्रशस्त होगा। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण का सेवापूर्व अध्यापकों पर पड़ने वाले सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव को समझने में सहायता होगी, जिससे विश्वविद्यालयी शैक्षिक परिवेश के नकारात्मक प्रभाव को दूर करने में सहायता प्राप्त होगी एवं उनका सर्वांगीण विकास करते हुए उनमे विभिन्न कौशलों को विकसित किया जा सकेगा।

शोध अध्ययन के माध्यम से सेवापूर्व अध्यापक अपने गुणों तथा कमियों को समझ सकेंगे तथा यह भी जान सकेंगे कि विश्वविद्यालयों का शैक्षिक परिवेश उनके व्यवहार, शैक्षिक उपलब्धि, आत्मसम्मान, ज्ञान तथा तनाव को किस प्रकार प्रभावित करता है। अध्ययन के परिणाम शिक्षकों, सेवापूर्व अध्यापकों तथा शैक्षिक प्रशासन को यह समझने में सहायता करेंगे कि किस प्रकार का विश्वविद्यालयी शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी होता है। शोध के माध्यम से सेवापूर्व अध्यापको के आत्मसमान, संतोष के स्तर तथा शैक्षिक प्रक्रिया के दौरान होने वाले तनाव के विषय में ज्ञान प्राप्त हो सकेगा जिससे उनकी कार्यस्थल संबंधी समस्याओं का निराकरण किया जा सकेगा और उनमे इन सभी गुणों को विकसित करने क लिए विशिष्ट कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकेगा, जिससे उन्हें सार्थक शिक्षा प्रदान करने में सहायता प्राप्त हो सकेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

अफरीदी, एस. एण्ड मकसूद, एस. (2017). परसीव्ड स्ट्रेस, लाइफ सैटिस्फैक्शन एण्ड सेल्फ स्टीम अमंग विमन स्टडिग इन को एजुकेशन एण्ड यूनी जेन्डर इंस्टीट्यूशन, *पेशावर जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एण्ड विहेविअरल साइंसेज*

vol 3(1) https://www.pjpbsicp.com/index.php/pjpbs/article/view/54

अलकेंटारा, एफ. (2021). लेवल ऑफ सैटिस्फैक्शन ऑफ़ द प्री सर्विस टीचर्स इन डेयर ऑफ़ कैंपस प्रैक्टिस टीचिंग एक्सपीरिएंस, https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=3829054

ओजकाँन, यू. बी. एंड एकजैक, ई. टीचर्स (2022). जॉब सटिस्फैक्शन: मल्टीलेवल एनालिसिस ऑफ़ टीचर, स्कूल एंड प्रिंसिपल इफेक्ट्स, फोरम फॉर इंटरनेशनल रिसर्च इन एजुकेशन वॉल. 7https://www.researchgate.net/publication/359510174.

डाट, डेन गूयेन, पामेल, ई. राइट एण्ड क्रिस्टीन, डेडींग (2019). लो सेल्फ स्टीम एण्ड इट्स एसोसिएशन विद एंग्जायटी, डिप्रेशन एंड सोसाइटल आइडिएशन इन वियतनाम सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स : अ क्रॉस सेक्शनल स्टडी. https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/fpsyt.2019.00698

देव, एस., परवीन, बी., शिंटो, टी.,वर्धन, बी., तिरुपति, आर. एंड निगार, के.(2016). डिप्रेशन अमंग इंडियन यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स एंड इट्स असोसिएशन विद परसीव्ड यूनिवर्सिटी ऐकडेमिक एनवायरनमेंट, लिविंग अरेंजमेंटेंड पर्सनल इश्यूज, राष्ट्रीय बायोटेक्नोलॉजी सूचना केंद्र https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/27969066/

एगोसटीना, एम., खूशैनी, के., मेलेन,एस. एण्ड एलिजाबेथ, ए. (2022). ऐकडेमिक इंटेरेस्ट डिटरमाइन्स दी ऐकडेमिक परफॉरमेंस ऑफ अन्डर ग्रेजुएट अकाउंटिग स्टुडेटन्स: *मल्टीनोमीयल लोमीट एविडन्स. कोजेन्ट बिजनस एण्ड मैनिज्मन्ट* Vol 9. https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/23311975.2022.2101326

गैलनकिस, एम. (2016). अ लिटरेचर रिव्यू ऑन द कनेक्शन विटवीन स्ट्रेस एण्ड सेल्फ स्टीम. साइकोलॉजी, 7, 687-694. Doi: 10.4236/psych.2016.75071. https://www.scirp.org/journal/paperinformation.aspx?paperid=66480

वेनडे, डी., मकेलिस्टर, एम., तोहोतोआ, जे., आमली, एल.,हिस्लॉप, के., एंड डुग्गन, आर.,(2017). द साइलेंस ऑफ़

मेन्टल हेल्थ इश्यूज विद इन यूनिवर्सिटी एनवायरनमेंट : ए कॉन्टिटेटिव स्टडी, *आर्काइव ऑफ़ साइक्लीयरट्रिक नर्सिंग,* वॉल्यूम 28 (5) , 0883-9417, https://www.sciencedirect.com/science/article/abs/pii/S0883941714001228

हफ़िज़, एम. (2021). इम्पैक्ट ऑफ टीचर्स ट्रैनिंग ऑन इंटेरेस्ट एण्ड ऐकडेमिक अचीवमेंट्स ऑफ स्टुडेटन्स वाय मल्टीपल टीचिंग मेथड्स. पेडागोजीकल रिसर्च, 6(3), issue 2.

https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1304720.pdf

होगेम एण्ड रोजर एंड्रि फ़ेडेरिसी (2020). इंटेरेस्ट इन टीचर एजुकेशन: एक्सपलोरींग द रीलैशन विटवीन स्टूडेंट् टीचर इंटेरेस्ट एण्ड एम्बिशन्स इन टीचर एजुकेशन. *युरोपियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन* vol 45, 2022- issue5

https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1860006

हॉक, के. ई., वैंग, एक्स., यैंग, क्यू. एण्ड नोरजन, एन. (2023). द फैक्टर्स एसोसिएटेड विद टीचर्स जॉब सटिस्फैक्शन एंड देयर इम्पैक्ट ऑन स्टूडेंट्स अचीवमेंट: ए रिव्यु (2010 -2021), युमनिटीज़ एंड सोशल साइंस कंम्यूनिकेशन आर्टिकल न. 177

https://www.nature.com/articles/s41599-023-01645-7

नोरोन्हा, एल. , मीना, एस., एण्ड नेल्सन पी. (2018). अ स्टडी ऑफ़ द सेल्फ स्टीम एंड ऐकडेमिक परफॉरमेंस अमंग द स्टूडेंट्स , *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हेल्थ साइंसेज एण्ड फार्मेसी* 2(1)

https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=3121006

नरयाना, जेड़., ज़ू ,डब्ल्यू. एण्ड ल्यू, एस. (2023). डेवलपिंग सेल्फ-स्टीम-बेस्ड-करिकुलम एज ए फाउंडेशन फॉर सस्टेनबल एजुकेशन : ए सिस्टमेटिक लिटरेचर रिव्यु एंड बिब्लियोमैट्रिक एनालिसिस. फ्रंट एजूकेशन 8 :957801.

https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/feduc.2023.957801

जूनियर, पी. वी., मैलिसा एफ. डब्ल्यू. एण्ड एलन जे. डेली (2021). फाइन्डिंग सैटिस्फैक्शन इन बिलोगिंग: प्री सर्विस

टीचर सब्जेक्टिव वेल बीइंग एंड इट्स रेलशनशिओ तो विलोंगिंग ट्रस्ट एंड सेल्फ एफिकेस. *ओरिजिनल रिसर्च आर्टिकल* vol 6

https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/feduc.2021.639435

फेलिप, आर. के. एण्ड ऑस्कर. ममानी बेनिटो (2022). अकेडमिक सेल्फ एफिकेसी, सेल्फ स्टीम, सटिस्फैक्शन विद स्टडीजएंड वर्चुअल मीडिया यूसेज डिप्रेशन प्रेडिक्टर्स अमंग कॉलेज स्टूडेंट्स ड्यूरिंग कोविड-19, हेलीयोन 8(11), नवंबर 2022,

https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S2405844022023738

राणा, बी. एण्ड डंगवाल, पी. (2020). सेल्फ स्टीम एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन ऐकडेमिक अचीवमेंट अमंग एडोलसेंट इन एंड अराउंड लखनऊ (यू. पी.) इंडिया, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेन्ट,* vol 11.

https://iaeme.com/MasterAdmin/Journal_uploads/IJM/VOLUME_11_ISSUE_12/IJM_11_12_319.pdf

शुसेन, वोगल एण्ड लार्स स. (2016). लर्निंग एंड मेमोरी अंडर स्ट्रेस: एम्प्टी केशन्स फॉर थे क्लासरूम ,*जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड प्रैक्टिस* 6(1)

https://www.researchgate.net/publication/304572997

गुप्ता,एस. पी. एवं गुप्ता,एल. (2018). शिक्षा मनोविज्ञान. (पंचम संस्करण). इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन.

कोठारी, सी. आर. (2004). रिसर्च मथोडॉलाजी, मेथड्स एण्ड टेक्नीकस. (सेकंड रेविसेड एडीशन). नई दिल्ली, न्यू ऐज इंटरनेशनल लिमिटेड (पी)

कौल, लोकेश (2014). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. (तृतीय संस्करण). नोएडा, विकाश पब्लिशिंग हाउस।

मंगल,एस. के. (2017). शिक्षा मनोविज्ञान(चतुर्थ संस्करण). आगरा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर।

सिंह, अरुण कुमार (2010). शिक्षा मनोविज्ञान(तृतीय संस्करण). नई दिल्ली, भारती भवन पब्लिकेशन्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।